

Br. 9, 5, 2, 1. AV. 8, 8, 18. परमापद्य पदयः 41, 1, 30. MBh. 1, 6142. नि-
ष्ठाम् 5, 99. पञ्चतम् 1, 5305. Daç. 1, 30. R. 2, 67, 4. कष्टे दशाम् Spr.
791. जीवितात्ययम् M. 10, 104. वशमापद्यते मे KATHOP. 2, 6. अनकृत्वश-
मापन्नम् MBh. 1, 6164. R. 3, 51, 4. Vet. in LA. 22, 17. मा मोहमापद्यथाः
PRAÇNOP. 2, 3. उद्वेगमापदे R. GORR. 2, 13, 6. चित्तमापदिरे HARIV. 8830.
R. 2, 53, 13. चित्तापन्ना Vet. in LA. 24, 11. 33, 7. अर्थसंशयमापन्नः MBh. 3,
7080. R. 3, 51, 13. संशयापन्नमानस AK. 3, 1, 5. परं विस्मयम् MBh. 3, 2856.
विश्वासम् PAÑKAT. 51, 17. परं निर्वृतिमापद्यते PRAB. 89, 4. प्रकृतिम् Da-
çAK. in BENF. Chr. 191, 7. नरलोकिताम् Buġ. P. 9, 14, 17. शब्दताम् ÇIKSHĀ
beim Schol. zu ĠAIM. 1, 21. रसताम् SĀH. D. 31, 15. दैत्यम् PRAB. 33, 8.
ज्ञोक्तवम् RAGH. 14, 70. Spr. 237. BHĀSHĀP. 12. विकारापन्न ÇĀṆK. zu BRH.
ĀR. UP. S. 244. पूर्वपौकवाक्यतापन्नमिदम् KULL. zu M. 2, 55. übergehen
in, sich verwandeln in: विसर्जनीयो रेफम् ÇĀṆKH. ÇR. 1, 2, 9. आपन्न =
प्राप्त H. an. 3, 358. MED. n. 38. kann mit einem im acc. gedachten Be-
griffe componirt werden P. 2, 1, 24. सुखमापन्नः und सुखापन्नः Sch. — 4)
in's Unglück gerathen: अर्थधर्मो परित्यज्य यः काममनुवर्तते । एवमापद्यते
निप्रं राजा दशरथो यथा ॥ R. 2, 53, 13. आपन्न in's Unglück gerathen, un-
glücklich AK. 3, 1, 42. H. 478. H. an. 3, 358. MED. n. 38. MBh. 3, 14948.
5, 6005. ÇĀK. 49. KATHĀS. 27, 35. DaçAK. in BENF. Chr. 196, 2. — 5) zu
Etwas kommen, erlangen, erhalten, in den Besitz von Etwas gelangen:
आपन्न in act. u. pass. Bedeutung: एवं कौशिकगोत्रम् — प्रवरात्तरमाप-
न्नम् Buġ. P. 9, 16, 37. जीविकापन्न = आपन्नजीविक P. 2, 2, 4, Sch. Nach
P. ist in beiden Fällen das subst. als acc. aufzufassen; vgl. AK. 3, 6, 8,
43. आपन्नसत्त्वा und प्राप्त unter आप् mit प्र. — 6) widerfahren: तस्मादिद-
नापदि (vgl. WEBER in Monatsber. 1859, S. 63) ÇĀT. Br. 1, 7, 3, 19. विद्योसोर्नू-
नमापादि धर्मो ऽयं निशाचरात् BHATT. 6, 31. geschehen, zu Stande kommen:
तेषां समाप्तिरापन्ना तव राम निवर्तने R. GORR. 2, 43, 31. zutreffen: एकर्च-
स्थानेष्वनापद्यमानानि तृषु कुर्यात् LĀTJ. 6, 4, 5. एवमापद्यते so v. a. so ist es,
so verhält es sich MĀLĀV. 14, 23. sich finden: नक्षेतास्वन्यत्सामापद्यते LĀTJ.
10, 2, 2. — आपन्न PAÑKĀT. 1, 29: fehlerhaft für आपन्न und BHART. 3, 49 für
प्राप्त. Vgl. आपत्ति, आपद्, आपाद् (?). — caus. 1) betreten machen, bringen
auf, in, zu: पन्थानम् ÇĀT. Br. 11, 1, 5, 6. 14, 7, 3, 13. व्याप्ते AV. 10, 5, 42. —
2) Jmd oder Etwas (acc.) in eine Lage, einen Zustand (acc.) bringen:
कृच्छ्रमापादिता वयम् MBh. 1, 1832. मृत्युमापादितो राजा त्वया R. 2, 73, 5.
(तापः) आपाद्यते न व्ययमत्तरपि: RAGH. 5, 5. — 3) in's Unglück bringen,
zu Grunde richten: बलादपराधिने मामापाद्यमि VIKR. 33, 2. अथवा सा-
गरे सेतुम् — शक्यापादयितुं लङ्का सेनैर्नापि सुरेश्वरैः R. 5, 92, 6. — 4) her-
beiführen, herbeischaffen, verschaffen, bringen, hervorbringen, veran-
lassen, verursachen: यो नस्तद्रूपमापादयेत्पुनः MBh. 1, 7873. तन्मयापादितं
ह्यये यन्मां प्रार्थयते भवान् Buġ. P. 3, 9, 29. 4, 22, 42. ममाप्यापादितं भयम्
R. 2, 74, 5. पित्तसंचयम् SuçR. 1, 20, 8. मार्दवम् 155, 4. 2, 191, 13. 318, 14. स्तन-
भरपुलकोद्भिदम् Spr. 918. RAGH. 2, 12. ÇĀNTIC. 3, 19. ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. UP.
S. 121. दौर्भाग्यमापादयते ऽभिमानः VARĀH. BRH. S. 74, 7. — 5) für sich
herbeischaffen, erlangen, in den Besitz gelangen von (acc.): अर्थरापादि-
तैर्गुर्व्या किंसयेतश्चेत्च Buġ. P. 3, 30, 11. प्राक्तनकर्मेपचीयमानपुण्यपर-
परापादितमक्षुण्णभाव (so ist zu lesen) Schol. in der Einl. zu KAURAP. —
6) machen zu, verwandeln in: पृथ्वी येन — विबुधाधारेयमापादिता Inschr.
in Journ. of the Am. Or. S. 6, 303, Çl. 9. लोकमव्याकृतावस्थं कारणाद्-

पमापद्य ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. UP. S. 250. एकामपि काकिकीं कार्षापणल-
तमापादयेम DaçAK. 183, 2. — Vgl. आपादन.

— अग्न्या sich hineinbegeben in, gerathen in: अग्निमेताभ्यां सर्वाणि
स्थानान्यभ्यापादं स्तीति durch alle Standörter hindurch NIK. 7, 26. न
संशयमभ्यापद्यते ĀÇV. GRHJ. 3, 9.

— प्रत्या zurückkehren, wiederkehren MBh. 12, 10731. प्रत्यापन्नेन्द्रि-
यस्मृति Buġ. P. 8, 41, 48. DaçAK. in BENF. Chr. 200, 19. im Prākṛit:
पञ्चावषतीविदं ÇĀK. Ch. 53, 8. — Vgl. प्रत्यापत्ति.

— व्या verderben, zu Grunde gehen, umkommen: नहि यत्र महावा-
ङ्गुर्वासुदेवो व्यवस्थितः । किंचिद्वापद्यते तत्र MBh. 7, 3008. व्यापन्न in
Unordnung gerathen, verdorben, missrathen: ऋतवः, श्रेयधयः SuçR. 4,
21, 9. Wasser 170, 20. विसर्जनीय alterirt, verändert RV. PRĀT. 4, 11,
5, 16. यत्र विसर्जनीयो व्यापद्यते (Gegens. श्रूयते) wo er verschwindet,
einem andern Laute Platz macht Schol. zu RV. PRĀT. 4, 11. अग्न्यापन्न
nicht umgekommen, am Leben setend Megh. 10, 99. — Vgl. व्यापत्ति,
व्यापद्. — caus. verderben, zu Grunde richten: शीतोन्नवातवर्षाणि
खलु विपरीतान्योपधीर्व्यापादयत्यपञ्च SuçR. 1, 21, 11. व्रणम् (verschlim-
mern) 70, 12. अर्थमोत्तरता नाम कृत्स्नं व्यापादयेज्जगत् MBh. 1, 1607. ver-
nichten: बोधव्यापादितात्मतमम् Buġ. P. 8, 17, 9. umbringen, tödten
MĀKĪH. 34, 16. ÇĀK. 6, 11. KATHĀS. 11, 65. 42, 48. RĪĠĀ-TAR. 4, 686. PAÑ-
ĀT. 22, 15. 34, 16. 47, 1. 48, 17. 53, 19. 64, 1. 68, 15. 69, 21. Hir. 20, 17.
अनाहोरेणात्मानं भवद्धारि व्यापादयामि 24, 12. 34, 19. 111, 21. Vet. in
LA. 22, 12. 23, 1. 25, 14. 33, 9. 37, 9. — Vgl. व्यापादन.

— समा 1) anfallen: यः कलिङ्गान्ममापदे पाञ्चाल्यो युद्धुर्दमः MBh.
5, 2002. — 2) gerathen in, sich in einen Gemüthszustand, ein Verhält-
niss, eine Lage begeben: अग्न्या योनिं समापन्ना शार्गलीं वानरीं तथा
MBh. 13, 411. चित्तं समापदे 1, 6747. गतीर्दश ममापन्ना प्रवर्तननिवर्तनैः
sich machen an R. 6, 92, 4. — 3) समापन्न = प्राप्त gekommen, genakt H.
an. 4, 199. MED. n. 220. समापन्नविपत्तिकाले (समासन्न?) Spr. 283. — 4)
समापन्न am Ende eines comp. versehen mit: गुणा^० MBh. 2, 2588. लोभ-
मोह^० 13, 336. MĀK. P. 15, 5. आर्ति^० R. 3, 73, 3 hierher oder zu 2. —
5) समापन्न = समाप्त beendet H. an. MED. — 6) समापन्न = क्लिष्ट ge-
playt, gequält diess. — 7) समापन्न = वध Tod diess. getödtet Wils. —
Vgl. समापत्ति.

— अभिसमा gerathen in: चित्तमभिसमापदे R. 2, 12, 1.

— उद् hervorgehen aus, entstehen, geboren werden: एतस्यै वै दिश
उदपद्यत ÇĀT. Br. 1, 7, 3, 20. उत्पद्यमानस्य यो हेतुस्तत्कारकमपादानं
स्यात् Schol. zu P. 1, 4, 30. शरीरम् — अयद्दुत्पद्यते M. 12, 16. वायोः —
ज्योतिरुत्पद्यते 1, 77. SĀMĀHJAK. 40. PRAB. 111, 15. VEDĀNTAS. (Allāh.) No.
41. Schol. zu KAP. 1, 124. यद्त्रोत्पत्स्यते भूतम् R. GORR. 1, 38, 9. MBh. 3,
12977. तादृक्चेतो गजो भूमौ भवानुत्पद्यताम् KATHĀS. 36, 121. उत्पत्स्य-
ति पुमान्नीच पातवंशे ममाद्ययः HARIV. 4631. उत्पद्यते गृहे यस्य न च
ज्ञापिते कस्य सः । स गृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तत्पत्सः ॥ M. 9, 170.
147. 203. 1, 98. HARIV. 12650. VID. 7. AK. 3, 4, 14, 88. कुन्तेरात्मजः — वि-
कुन्तिरुत्पद्यत R. 1, 70, 22. 110, 8. विबुदताभिधानश्च पुत्रस्तस्योदपद्यत
KATHĀS. 32, 43. इत्वाकोः पुत्रः — अलम्बुषायामुत्पन्ना विशालः R. 1, 47,
12. वैदेहकेन लम्बुष्यामुत्पन्नः M. 10, 19. R. 6, 3, 25. अग्न्योत्पन्ना प्रजा M.
5, 162. सत्कुलोत्पन्ना KATHĀS. 4, 33. तदुत्पन्नः कनोवान् SĀJ. zu RV. 1, 125,